MR. BAIJU BAWRA
DOE
A.N.D. College

B.Ed- 1st year
Course- -(c)
Unit -
Topic —
Hindi : Text-Book

HINDI : TEXT-BOOK

भारतीय भाषा इतिहास के अनुसार प्राचीनकाल में लिपि के आविष्कार से पूर्व भाषा की शिक्षा मौखिक रूप में दी जाती है। शनैः शनैः लिपि का जन्म एवं विकास हुआ तथा हस्तलिखित पुस्तकों का प्रचलन प्रारंभ हुआ जो मानव विकास की श्रृंखला की एक अद्भुत कड़ी के रूप में आज सामने आती है मानव ने भाषा विकास के लिए काफी कठिन परिश्रम किया है। जिसके लिए आज की पीढ़ी उनकी आभारी है। प्रारंभ काल में पुस्तकें हाथ से ही लिखी जाती थीं क्योंकि आज की तरह उस समय छापेखाने नहीं थे। हस्तलिखित पुस्तकें कम होती थीं इसलिए प्रत्येक छात्र को पुस्तक देना संभव नहीं था। अतः अध्यापक मौखिक शिक्षण कार्य ही करते थे। जिस छात्र की स्मरण शक्ति अच्छी होती थी वह अध्यापक के विचारों को सुनकर याद कर लेता था तथा स्वयं लिखकर एक पुस्तक का निर्माण करता था। इस विधि द्वारा ज्ञान का प्रसार एवं प्रचार होता था। किन्तु अन्य देशों की भाँति भारत में भी मुद्रण पर विभिन्न प्रयोग प्राचीन समय से ही जारी रहे हैं। जिसके फलस्वरूप आज हमें उन्नत प्रकार की प्रकाशित पुस्तकें सरल एवं सरल रूप में प्राप्त हो रही हैं।

भारत में किये गए विभिन्न प्रयोगों के आधार पर पाठ्य-पुस्तकों को शिक्षण प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग माना गया है। पाठ्य-पुस्तकों को साध्य के रूप में प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। छोटी कक्षाओं से लेकर उच्च कक्षाओं तक हिन्दी विषय के ज्ञान के प्रचार-प्रसार

Scanned with CamScanner

के लिए पाठ्य-पुस्तक अति आवश्यक है। पाठ्य-पुस्तक एक अतिमहत्वपूर्ण साधन है जिसका उपयोग स्कूलों में शैक्षिक कार्यक्रम को सम्पादित करने के लिए किया जाता है।

पाठ्य-पुस्तक (Text Book)

प्राचीन समय में पाठ्य-पुस्तक के लिए ग्रंथ शब्द का प्रयोग किया जाता था। ग्रंथ शब्द का अर्थ होता है गूँथना या नियमित ढंग से जोड़ना अथवा क्रम में रखना। प्राचीन समय में गुरु अपने शिष्यों के समक्ष भोजपत्र के ऊपर लिखी सामग्री को क्रम में रखते थे तथा वे भोजपत्र एक क्रम में गूँथे रहते थे इसीलिए उसे ग्रंथ कहा जाने लगा। इसी प्रकार अंग्रेजी के Book शब्द का जन्म यद्यपि जर्मनी के शब्द हैं। जिसका अर्थ है वृक्ष, फ्रेन्च शब्द में इसका अर्थ वृक्ष की छाल या तख्ती पर लिखना।

आज के परिप्रेक्ष्य में एक निश्चित पाठ्यक्रम में अध्ययन के लिए क्रमबद्ध रूप में निश्चित विषय पर व्यवस्थित रूप से संकलित अध्ययन सामग्री जिसको हम पुस्तक के रूप में स्वीकार करते हैं। कोनबेव ने पुस्तक के बारे में लिखा है कि पुस्तक प्रायः अप्रौढ़ वर्गों के लिए लिखी जाती है। पुस्तक के विकास एवं प्रचार के साथ ही शैक्षिक तकनीकी का भी विकास हो रहा है जिसके कारण से अनुदेशन सामग्रियों में भी विकास और विस्तार हो रहा है। संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों ही दृष्टियों से इन सामग्रियों की उन्नति हो रही है इनमें दो श्रेणियाँ हैं।

1. मुद्रित (printed)
2. अमुद्रित (Un-printed)

Scanned with CamScanner